E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

मुद्राराक्षस

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

विशाखदत्त संस्कृत नाटककारों में अग्रणी पङ्क्ति में परिगणित हैं, और उनकी एकमात्र उपलब्ध कृति "मुद्राराक्षस" अपने वैशिष्ट्यों के कारण प्राचीनकाल से विद्वानों तथा आलोचकों का हृदयावर्जन करती रही है। साहित्यशास्त्र के आचार्यों ने प्रभूत रूप से इस नाटक को समुद्धृत किया है। यह ऐतिहासिक नाटक चाणक्य के बुद्धि-वैभव का उद्घोषक है।

विशाखदत्त का मुद्राराक्षस अपनी विशिष्ट कथावस्तु और नाटकीय उपन्यास कौशल के कारण संस्कृत वाङ्मय की एक बहुत ही समादृत और लोकप्रिय नाट्यकृति है। सामान्यतः शृङ्गार और वीररस से ओतप्रोत संस्कृत नाट्यकृतियों के स्थान पर इस नाट्य ग्रन्थ में राजनीतिक घात-प्रतिघात और बुद्धि कौशल के प्रभाव से शत्रु को पराभूतकर विजयश्री को हस्तगत करना एक महती उपलब्धि है। भारतीय वाङ्मय में चाणक्य या विष्णुगुप्त अथवा कौटिल्य अपने अपूर्व बुद्धिकौशल और अपराजेय व्यक्तित्व के कारण सर्वतः चर्चित हैं। उन्होंने अपने बुद्धिकौशल रूपी वज्र के प्रहार से सुपर्वा नन्द पर्वत को ढहा कर चन्द्रगुप्त मौर्य को पाटलिपुत्र की गद्दी पर प्रतिष्ठापित किया तथा नन्दवंश के स्वामिभक्त अमात्य को उन्होंने अपने बुद्धि कौशल से पराजित कर चन्द्रगुप्त के अमात्य पद पर प्रतिष्ठापित किया। इस घटना को सुघटित करने में यथासंभव रक्तपात और व्यापक युद्ध को बचाते हुये राक्षस को अपनी ओर ले आना इस नाटक की कथा का मूलांश है।

यह नाटक इतिहासाश्रित होने के साथ ही साथ महान् राजनीतिक कौशल और कूटनीतिक प्रौढ़ि का परिचायक है। विशाखदत्त शृङ्गार प्रचुर भावावेश को तिरस्कृत कर विचार प्रधान और जगत् के वास्तविक घटना क्रम को प्राधान्य देकर गम्भीर कूटनीति की सफलता को प्रदर्शित करते हैं और दर्शाते हैं कि जीवन का यह भी एक पक्ष है जो जगत् में अवलोकित होता है। वस्तुतः शृङ्गार और वीर

के भावात्मक पक्ष के प्रदर्शन में काल्पनिक अंश का आना स्वाभाविक ही है पर यथार्थ द्वन्द्वात्मक जगत् में घात-प्रतिघातमय विजय पराजय एक सार्वत्रिक घटना है। इस दृष्टि से विशाखदत्त संस्कृत के अन्य नाटककारों से अपना गरिमामय भिन्न अस्तित्व विशिष्टता के साथ प्रदर्शित करते हैं। विशाखदत्त अपनी कृति में यह भी बड़ी सफलता के साथ प्रदर्शित कर सके हैं कि वे भावप्रवण काव्य को रचना नहीं कर रहे हैं अपितु नाटक की रचना कर रहे हैं जिसकी सफलता और उसकी प्रभावात्मकता उसकी भावप्रवणता में नहीं अपितु नाटकीय वस्तु- योजना और उसके प्रभावात्मक उपन्यास में है।

विशाखदत्त का पाण्डित्य- विशाखदत्त को नाट्य कला के सूक्ष्म तत्त्वों के ज्ञान के साथ-साथ अन्य शास्त्रों का भी प्रगाढ़ परिचय था। मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है और इसका प्रमुख रस वीर है। कथावस्तु कहीं से भी ली गई हो पर उसका विधान और निर्वाह उनका अपना है। उनकी दृष्टि विचार पक्ष की गम्भीरता से मण्डित है। नाटककार के गम्भीर उत्तरदायित्व का निर्वाह कितना कष्ट का है – यह विशाखदत्त को मालूम है। नाट्यशास्त्र का उन्होंने अध्ययन किया था। उसके अनुसार रूपक के विभिन्न अङ्गों के निर्वाह की दुरूहता को भी वह भली भांति समझते थे। तभी तो राक्षस के मुख से कहलवाया है-

कार्योपक्षेपमादौ तनुमपि रचयंस्तस्य विस्तारमिच्छन्
बीजानां गर्भितानां फलमतिगहनं गूढमुद्भेदयंश्च।
कुर्वन्बुद्धया विमर्शं प्रसृतमपि पुनः संहरन् कार्यजातं
कर्ता वा नाटकानामिममनुभवति क्लेशमस्मद्विधो वा।।

इस कष्ट का परिचय तो विशाखदत्त के समान कुशलनाटककार को ही हो सकता है। विशाखदत्त कौटिल्य के अर्थशास्त्र, शुक्रनीति एवं अन्य नीति शास्त्रों में वर्णित राजनीति विज्ञान से पूर्ण परिचित थे। अपने दृष्टिकोण से लेखक ने अर्थशास्त्र के विचारों को मुद्राराक्षस में समाहित किया है। अर्थशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों का नाटककार ने अपनो रचना में अधिक प्रयोग किया है। यथा-द्रव्य, अद्रव्य, कृत्य, परिगणन, गजाध्यक्ष, सिद्धि, वाचिक, षाड्गुण्य, उपाय, उपजाप, बाह्यकोष और अन्तःकोष आदि। तृतीय अङ्क में विरक्त व्यक्तियों के अनुग्रह और निग्रह के विषय में विस्तृत विचार

किया गया है। यहीं पर राजायत्त, सचिवायत्त, उभयायत्त- इन तीन प्रकार की शासन व्यवस्थाओं की भी चर्चा है। अमात्यविषयक गुणों का इस श्लोक में निर्देश है-

अप्राज्ञेन च कातरेण च गुणः स्याद् भक्तियुक्तेन कः
प्रज्ञाविक्रम शालिनोऽपि हि भवेत्किं भक्तिहीनात्फलम्।
प्रज्ञाविक्रमभक्तयः समुदिता येषां गुणा भूतये
ते भृत्याः नरपतेः कलत्रमितरे संपत्सु चापत्सु च।।

समकालीन धर्मों का भी नाटककार को विस्तृत ज्ञान है। क्षपणक मुख से कहलाये गये निम्नलिखित पद्य में बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों के का दिग्दर्शन मिलता है-

आर्हतानां प्रणमामि ये ते गम्भीरतया बुद्धेः।
लोकोत्तरैर्लोके सिद्धिं मार्गैर्गच्छन्ति।।
शासनमर्हतां प्रतिपद्यध्वं मोहव्याधिवैद्यानाम्।
ये प्रथममात्रकटुकं पश्चात्पथ्यमुपदिशन्ति।।

विशाखदत्त की अपनी यह विशेषता है कि उनकी प्रतिभा शास्त्रीय ज्ञान से कुण्ठित न होकर लोकचातुरी में और भी अधिक निखरी है। दर्शनशास्त्र का भी विशाखदत्त को पर्याप्त ज्ञान था। जैसे-

साध्ये निश्चितमन्वयेन घटितं विभ्रत्सपक्षे स्थितिं व्यावृतं च विपक्षतो भवति यत्तत्साधनं सिद्धये।
यत्साध्यं स्वयमेव तुल्यमुभयोः पक्षे विरुद्धञ्च यत् तस्याङ्गीकरणेन वादिन इव स्यात्स्वामिनो निग्रहः।।

इस प्रकार विशाखदत्त की रचना से यह ज्ञात होता है कि उनका ज्ञान बहुमुखी है। क्या दर्शन शास्त्र, क्या नाट्यशास्त्र, क्या व्याकरण और क्या ज्योतिष शास्त्र एवं राजनीति शास्त्र सभी में उनकी अबाध गति है। साहित्य तो उनका प्रतिपाद्य था ही। यही कारण है कि वे अपने इस राजनीति के नाटक को वह रूप दे सके हैं, जो विविध शास्त्रों के सूक्ष्म सिद्धान्तों से अनुप्राणित होता हुआ भी राजनीति के सिद्धान्तों पर विशद रूप से प्रकाश डालता है और राजनीति को क्रियात्मक रूप देते हुए भी नाटक की नाटकीयता को अक्षुण्ण रखा है।

विशाखदत्त का व्यक्तित्व- विशाखदत्त राजनीतिवेत्ता होने के कारण एक उच्चकोटि के विचारक हैं। इनके नाटक को कथावस्तु की मूलभित्ति कोई न कोई विचार तत्त्व ही है जिसके आधार पर विशाखदत्त की कथावस्तु का कलेवर तैयार होता है। नाटक की अभिव्यक्ति यदि नाटककार के व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति है तो यह निश्चित है कि मुद्राराक्षस में विशाखदत्त का व्यक्तित्व झलकता है। उसके तीन स्वरूप हैं- राजनीतिक आदर्शवादी, राष्ट्रीय जीवनदर्शी एवं मनुष्यता के महाविश्वासी। नाटक में चाणक्य राष्ट्रीय राजनीति का कर्णधार है जिसकी आत्मा त्याग की भावना तथा राष्ट्रहित की रक्षा है। चन्द्रगुप्त राष्ट्र के शासन का सम्राट् है जो जनता की पराधीनता में एवं शासक की स्वतंत्रता में आत्म गौरव का अनुभव करता है। राक्षस राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करने को तैयार रहता है। नाटक के अन्य पात्र दूत, गुप्तचर, प्रणिधि आदि भी कर्तव्य की भावना से ओत-प्रोत दिखाई पड़ते हैं। आस्था की दृष्टि से नाटककार वैदिक धर्म का अनुयायी मालूम पड़ता है क्योंकि उसका दृष्टिकोण शिव, विष्णु, सूर्य और बौद्धों के प्रति श्रद्धापूर्ण है। वे किसी धर्म के विरोधी नहीं होते हुए भी हिन्दू धर्म में विश्वास रखते थे, एवं उनमें सनातन वैदिक धर्म की छाप भी दिखलायी पड़ती है। वे ज्योतिषशास्त्र के जानकार थे, क्योंकि चतुर्थं अङ्क में क्षपणक जीवसिद्ध के आने को अपशकुन समझा गया है।

मुद्राराक्षस नाटक की विशिष्टता- विशाखदत्त का 'मुद्राराक्षस' नाटक अपनी विशेषताओं के कारण संस्कृत साहित्य के नाट्य जगत में विशिष्ट स्थान रखता है। नाटककार ने एक नई शैली की उद्भावना करते हुए नाटक का सम्पूर्ण कलेवर सात अङ्कों में विभक्त किया है। संस्कृत की नाट्य परम्परा के अनुसार नाटक में प्रेम एवं प्रणय पूर्ण रससिक्त वातावरण का नितान्त अभाव है। सम्भवतः संस्कृत साहित्य के उपलब्ध रूपकों में यही एक ऐसा रूपक है जिसकी कथावस्तु का आधार पूर्णतः कूटनीतिक राजनीति ही है। यह नाटक आद्योपान्त ओजस्विता, पौरुष एवं बुद्धिकौशल के ऊपर आश्रित है। इसलिए इसका नाटकीय वातावरण तेजस्विता से ओत प्रोत है। महाकवि भास का 'प्रतिज्ञा-यौगन्धरायण' भी कूटनीति पर आश्रित नाटक है परन्तु इसमें मुद्राराक्षस के समान ओजस्विता का अभाव है। भट्टनारायण के 'वेणीसंहार' से भी इसकी तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि वेणीसंहार में योद्धाओं के तलवारों की झंझनाहट, मार-काट एवं घोड़ों की भयानक आवाज भयंकर युद्ध स्थली

का भय उत्पन्न कर देती है। इस नाटक में वीर रस उपस्थित है परन्तु रणभूमि की भयंकर ध्वनि नहीं सुनाई पड़ती। यहाँ पर वीर सैनिको के शस्त्रों से युद्ध नहीं होता अपितु चाणक्य और राक्षस के बीच बुद्धि एवं कूटनीति का युद्ध है।

इसमें चाणक्य की प्रतिभा और कूटनीति के द्वारा नन्दवंश के विनाश के अनन्तर राक्षस को अपने वश में कर उसे चन्द्रगुप्त का महामात्य बनाना वर्णित है। इस नाटक की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-(क) संस्कृत की नाट्यपरम्परा के विपरीत प्रेम कथा का अभाव। (ख) नाटक को हास्य रस से परिपूर्ण करते हुए नाटक की गति प्रदान करने वाले विदूषक का अभाव। (ग) राजनीति एवं कूटनीतिक चाल का वर्णन है। (घ) इस नाटक में शृङ्गारिक भावना के अभाव के साथ उन परिस्थितियों का भी अभाव है जो शृङ्गार की भावना के लिए आवश्यक होती हैं। (ङ) नाटक के पात्र अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उचितानुचित सभी कार्यों को करते हैं। (च) पात्रों के चरित्राङ्कन में नाटककार पूर्णतः सफल है। (छ) नाटककार किसी धर्म विशेष के प्रति आग्रह न करते हुए भी हिन्दू धर्म का अनुयायी है एवं राजनीतिक नाटक होने के कारण इसमें नैतिकता पर जोर नहीं दिया गया है। (ज) विशाखदत्त ने अङ्कों का विभाजन दृश्यों के आधार पर करके एक नवीन मौलिक परम्परा का सूत्रपात किया है।

नाटक की संक्षिप्त कथा वस्तु-मुद्राराक्षस नाटक सात अङ्कों में विभक्त है एवं इस नाटक को जीवन प्रदान करने वाला पात्र या प्रमुख पात्र वस्तुतः चाणक्य है। नाटक के कथानक का केन्द्रविन्दु नन्दवंश का महामात्य राक्षस है। चाणक्य राक्षस के बुद्धि कौशल, कर्तव्यनिष्ठा, स्वामिभक्त एवं मित्र के लिए सर्वस्व त्याग की भावना से पूर्ण परिचित है। चाणक्य की कूटनीतिक चालों का मुख्य उद्देश्य यह है कि राक्षस को अपने वश में करके उसे चन्द्रगुप्त का अमात्य पद ग्रहण कराये एवं इसी उद्देश्य को लक्ष्य करके चाणक्य एवं राक्षस के बीच कूटनीति चालों का युद्ध होता है जो कि इस नाटक का आधार है।

प्रथम अङ्क में चाणक्य को अपने गुप्तचर द्वारा यह विदित होता है कि कुसुमपुर में राक्षस के प्रिय पात्र तीन व्यक्ति हैं-मणिकार श्रेष्ठी चन्दनदास, कायस्थ शकटदास एवं क्षपणक जीवसिद्धि (चाणक्य का गुप्तचर)। जौहरियों के नेता इसी चन्दनदास के घर राक्षस का परिवार है एवं इसी के प्रासाद में राक्षस

नाम अङ्कित मुद्रा की प्राप्ति के आधार पर चाणक्य शकटदास से एक कूटलेख लिखवाकर उसे मुद्रा अङ्कित कर देता है। यही मुद्रा (अंगूठी) राक्षस की विफलता का कारण बनती है एवं इसी घटना में नाटक का नाम 'मुद्राराक्षस' सन्निविष्ट है। द्वितीय अङ्क में राक्षस को राजनीतिक बुद्धि एवं उसकी योजनाओं की विफलता का वर्णन है। राक्षस ने अपने गुप्तचरों के माध्यम से कुसुमपुर प्रवेश के समय चन्द्रगुप्त की गुप्त हत्या की एक योजना तैयार की थी, परन्तु चाणक्य को सावधानी के कारण वह योजना सफल नहीं हो पायी बल्कि प्रारम्भ में ही ध्वस्त हो गयी। तृतीय अङ्क में कौमुदी महोत्सव के आयोजन के रोक का वर्णन है जिसमें चाणक्य एवं चन्द्रगुप्त के बीच आपसी मतभेद दिखाई पड़ता है। शारदी पूर्णिमा को कौमुदी महोत्सव के आयोजन की राजाज्ञा थी परन्तु चाणक्य जान बुझ कर उस आज्ञा का उल्लंघन करता है इस घटना से राक्षस का कुछ समय के लिए अपनी योजना सफलीभूत मालूम पड़ती है। चतुर्थ अङ्क में राक्षस को अपनी योजना की विफलता का संकेत मिलता है। राक्षस चन्द्रगुप्त को सिंहासन से हटाकर उस पर पर्वतीय राजकुमार मलयकेतु को आसीन कराना चाहता है। राक्षस को मलयकेतु पारितोषिक के रूप में अभूषण प्रदान करता है। पञ्चम अङ्क में मुद्रित लेख एवं आभूषण के साथ सिद्धार्थक गिरफ्तार होता है। इन वस्तुओं के साथ सिद्धार्थक को पकड़े जाने पर मलयकेतु को राक्षस के ऊपर यह सन्देह हो जाता है कि वह चाणक्य से मिला हुआ है। इसके परिणाम स्वरूप राक्षस का निष्कासन एवं उसके सहयोगी राजाओं का प्राणदण्ड होता है। इस अङ्क में चाणक्य के कूटनीति सफलता का दिग्दर्शन होता है। षष्ठ अङ्क में अपनी योजना से असफल एवं निराश राक्षस अपने मित्र चन्दनदास के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए कुसुमपुर पुनः वापस लौटता है जहाँ पर एक व्यक्ति से भेंट होती है जिसके माध्यम से उसे चन्दनदास के भावी प्राणदण्ड की सूचना मिलती है। सप्तम अङ्क में चन्दनदास चाण्डाल के द्वारा वह्य स्थान की की ओर ले जाया जाता है जहां उसकी पत्नी अपने पुत्र के साथ मर जाने की घोर प्रतीज्ञा करती है। चन्दनदास का यह दण्ड मिलने का कारण यह था कि उसने अपने यहाँ राक्षस परिवार को आश्रय दिया था। राक्षस अपने मित्र चन्दनदास को इस विपत्ति से मुक्ति दिलाने हेतु चाणक्य के सामने आत्मसमर्पण कर देता है एवं चन्द्रगुप्त का अमात्यपद ग्रहण कर लेता है। यहीं नाटक की समाप्ति होती है। इस अन्तिम घटना में

चाणक्य की असाधारण बुद्धि और कूटनीति का परिचय मिलता है। इस अन्तिम अङ्क में विशाखदत्त ने बहुत ही सफलता के साथ कार्यान्विति का निर्वाह किया है।

नाटकीय पात्रों का चरित्र चित्रण- पात्रों के चरित्र चित्रण में विशाखदत्त की लेखनी अपना विशिष्ट कौशल प्रदर्शित करती है। विशाखदत्त पात्रों के चरित्र चित्रण में असाधारण रूप से कुशल हैं। नाटक में २९ पात्र हैं, जिनमें २८ पुरुष पात्र हैं और केवल एक स्त्री पात्र । प्रमुख पात्र ६ हैं, किन्तु गौण पात्रों का भी महत्त्व कम नहीं है। प्रमुख ६ पात्र हैं- चाणक्य, राक्षस, चन्द्रगुप्त, मलयकेतु, चन्दनदास, शकटदास। विशाखदत्त ने प्रतिद्वन्द्वी युगल के रूप में प्रथम चार पात्रों को प्रस्तुत किया है। शेष दो राक्षस के परम मित्र हैं। यदि चाणक्य कूटनीतिज्ञ, शक्ति का सूत्रधार, सतत सतर्क, पुरुषार्थवादी, बुद्धिजीवी, जोड़-तोड़ और दांव-पेंच में दक्ष, विश्वस्त पर भी विश्वास न करने वाला, प्रधान मन्त्री होकर भी झोपड़ी में रहने वाला है तो राक्षस कूटनीति में अत्यन्त निपुण होने पर भी आस्तीन के साँपों को न पहचानने वाला, भाग्यवादी, कपट मित्रों पर भी विश्वास करने वाला, मित्रों के लिए सर्वस्व त्यागी, उदारमना, कूटनीतिक चालों में सभी साधनों को अपनाने वाला, गुणों से चाणक्य तक को मुग्ध करने वाला है। चन्द्रगुप्त योग्य शासक होने पर भी चाणक्य के हाथ की कठपुतली है। मलयकेतु पुरुषार्थी होने पर भी उद्दण्ड और अविवेकी है। चन्दनदास और शकटदास विश्वसनीय मित्र, मित्र के लिए सर्वस्व त्यागी और प्राणों तक की बलि देने वाले व्यक्ति हैं।

मुद्राराक्षस नाटक का नायक-विशाखदत्त के मुद्राराक्षस नाटक का नायक किसे माना जाय, इस पर विद्वानों में मतभेद है। कुछ लोग चन्द्रगुप्त को नायक स्वीकार करते हैं क्योंकि भारतीय नाट्यशास्त्र की परम्परा के अनुसार फल का भोक्ता चन्द्रगुप्त है इसलिए चन्द्रगुप्त नायक है। परन्तु, कुछ विद्वान् चाणक्य को नायक मानते हैं स्वयं विशाखदत्त का भी संकेत चाणक्य की ही ओर है-

“जयति जयनकार्यं यावत्कृत्वा च सर्वे।

प्रतिहतपरपक्षा आचार्यचाणक्यनीतिः”।।

नाटक का नामकरण भी इसी को ध्यान में रखकर किया गया है-मुद्रया गृहीतो राक्षसो यस्मिन् तत् मुद्राराक्षसनाम नाटकम्। इस मुद्रा को आधार बनाकर चाणक्य अपने कूटनीतिक उद्देश्य को प्राप्त

करता है। राक्षस को पराजित करना एवं चन्द्रगुप्त का अमात्यपद राक्षस को सौंपकर चन्द्रगुप्त का निष्कंटक साम्राज्य स्थापित करना यही चाणक्य का उद्देश्य था। इसमें वह पूर्णरूप से सफल हुआ है। नाटक की समाप्ति के पश्चात् चाणक्य आदेश देता है-

विना वाहनहस्तिभ्यो मुच्यतां सर्वबन्धनात्।

पूर्णप्रतिज्ञेन मया केवलं बध्यते शिखा।।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि नाटक का नायक चाणक्य है। चाणक्य नन्दवंश का विनाशक एवं मौर्य साम्राज्य का संस्थापक एवं संरक्षक है।

समीक्षण- विशाखदत्त की शैली ओजस्वी घोर-गम्भीर एवं प्रवाहमयी है। उनकी कला का प्रदर्शन नाटक में भारस्वरूप नहीं है। उन्होंने औचित्य को ध्यान में रखकर प्रत्येक पद का सृजन किया है। विशाखदत्त में कालिदास के समान उदात्त कल्पना तथा सरस भावतरलता भले हो न हो, हर्ष के समान कोमल एवं विलासी प्रणय चित्र भले ही न हो, शूद्रक के समान व्यंग्य एवं करुणा की सृष्टि न हो, भवभूति के समान हृदय को रुलाने वाली करुणा का प्रसार और प्रकाण्ड पाण्डित्य भले हो न हो, भट्टनारायण के समान योद्धाओं को समराङ्गण में प्राण देने के लिए आमन्त्रित करने वालो दुन्दुभि घोष न हो परन्तु उपर्युक्त न्यूनताओं के होते हुए भी विशाखदत्त की अपनी एक शैली है। विशाखदत्त का शब्द विन्यास, उपमाएँ एवं अप्रस्तुत चित्रविधान सुरुचिपूर्ण ढंग से सँजाये गये हैं। ये निरर्थक वागाडम्बर से दूर रहकर नाटकीय प्रवाह एवं प्रभाव को जीवन्त बनाये रखते हैं। मुद्राराक्षस का प्रधान रस वीर है। नाटक के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक जो रस विद्यमान रह कर अभिनय में प्रयुक्त अन्य रसों तुलना में अधिक व्याप्त हो उसे अङ्गी या प्रधान रस कहते हैं। नाटक के पात्रों का आचरण भी वीर रस के अनुकूल है। नाटक के प्रमुख पात्र चन्द्रगुप्त एवं चाणक्य हैं। इनका लक्ष्य केवल यही है कि नन्दवंश को विनष्ट करके चन्द्रगुप्त का निष्कंटक एवं एकच्छत्र राज्य का मार्ग प्रशस्त हो जाय। इन मनोवृत्तियों का सम्यक् परिस्फुरण वीर रस में ही सम्भव है। विशाखदत्त ने इस नाटक में वीर रस के सम्यक् परिपाक का पूरा प्रयास किया है और उसमें साफल्य प्राप्त किया है।

विशाखदत्त संस्कृत के उन नाटककारों में हैं, जिन्हें प्रगतिवादी नाटककार कहा जा सकता है। उनमें क्षमता है कि वे नई विधा, नई परम्परा और नई दिशा को जन्म दे सकें। उनमें मौलिकता है, नवीनता है और शक्तिमता है। वे सशक्त भाषा में जटिल राजनीतिक घात-प्रतिघातों का वर्णन करने में पूर्णतया दक्ष है। यही कारण है कि वे परम्परागत रूढ़ियों का परित्याग करके भी संस्कृत साहित्य में अपना अनुठा स्थान बना सके हैं।

मौलिकता- विशाखदत्त ने कई दृष्टि से अपने नाटक को मौलिक बनाया है- (१) सर्वथा राजनीतिक वातावरण; (२) परम्परागत प्रेमाख्यान का परित्याग; (३) राजा के अतिरिक्त अन्य मंत्री चाणक्य को नायक बनाना, (४) नायिका का सर्वथा प्रभाव; (५) विदूषक का बहिष्कार; (६) कथा संयोजन की नवीन विधा; (७) नाममात्र भी रक्तपात के बिना वीररस का वर्णन; (८) शृङ्गार और हास्य रस का अभाव, (६) आदर्शवादिता का अभाव; (१०) स्त्री-पात्रों का प्रभाव, केवल नाममात्र के लिए चन्दनदास की पत्नी का रंगमंच पर प्रवेश।

नाटय-कुशलता- विशाखदत्त की नाट्य-कुशलता का सबसे प्रमुख अंग गत्यात्मकता है। कथा इस प्रकार रखी गई है कि उसमें कहीं भी गतिरोध या गतिभंग नहीं होता। सभी अनावश्यक प्रसंगों को हटा दिया गया है। घटना चक्र के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए शृङ्गार और हास्य के वर्णनों की उपेक्षा की गई है, फिर भी नाटक में कहीं अरोचकता नहीं आने पाई है। कवि की नाटकीय विशेषता यह भी है कि नाटक के प्रारम्भ से ही अघटित घटनाओं के लिए उसकी उत्सुकता बनी रहती है। इस नाटक में जासूसी उपन्यासों के तुल्य प्रारम्भ अन्त तक रहस्यात्मकता व्याप्त है। कोई नहीं जान सकता है कि चाणक्य के किस दाँव-पेंच का क्या परिणाम होगा और उसका क्या उद्देश्य है? नाटक के अन्त में ही सब गुत्थियाँ सुलझती हैं। राजनीतिक नाटक होने पर भी सुख है तथा रंगमंच पर कोई अप्रिय घटना नहीं घटने पाती, यह नाटककार के लिए गौरव की बात है। राजनीतिक नाटक में भी शृङ्गार-प्रधान नाटकों के तुल्य रोचकता, आकर्षण और मनोरंजकता ला देना कवि की नाट्य-कुशलता का परिचायक है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए कवि ने राक्षस के द्वारा नाटककार और राजनीतिज्ञ की असाधारण कठिनाइयों की चर्चा कराई है।

कथा-संयोजन- विशाखदत्त की सूक्ष्म दृष्टि कथा-संयोजन में प्रत्यन्त दक्ष है। नाटक के लिए क्या हेय है, क्या उपादेय है, क्या प्रासंगिक है, क्या प्रासंगिक है, क्या नाट्योपयोगी है, इनका उन्हें नीर-क्षीर विवेक है। यही कारण है कि वह एक नाटक में नन्दवंश-विनाश से लेकर राक्षस द्वारा चन्द्रगुप्त के अमात्य-पद स्वीकृति तक के विशाल घटनाचक्र को समेटने में सफल हो सका है।